प्रकाशक:

सस्टेनेबल इन्वाइरनमेंट एण्ड इकॉलॉजीकल डेवलपमेन्ट सोसाइटी (सीड्स)
Sustainable Environment and Ecological Development Society (SEEDS)

एशियन डिज़ास्टर रिडक्शन रिस्पॉन्स नेटवर्क (ए डी आर आर एन)
Asian Disaster Reduction Response Network (ADRRN)

एशियन डिज़ास्टर रिडक्शन सेंटर (ए डी आर सी)
Asian Disaster Reduction Center (ADRC)

सहयोग:

जापान सरकार
Government of Japan

इनामुरा-नो-ही

जापान से सुनामी की एक कहानी

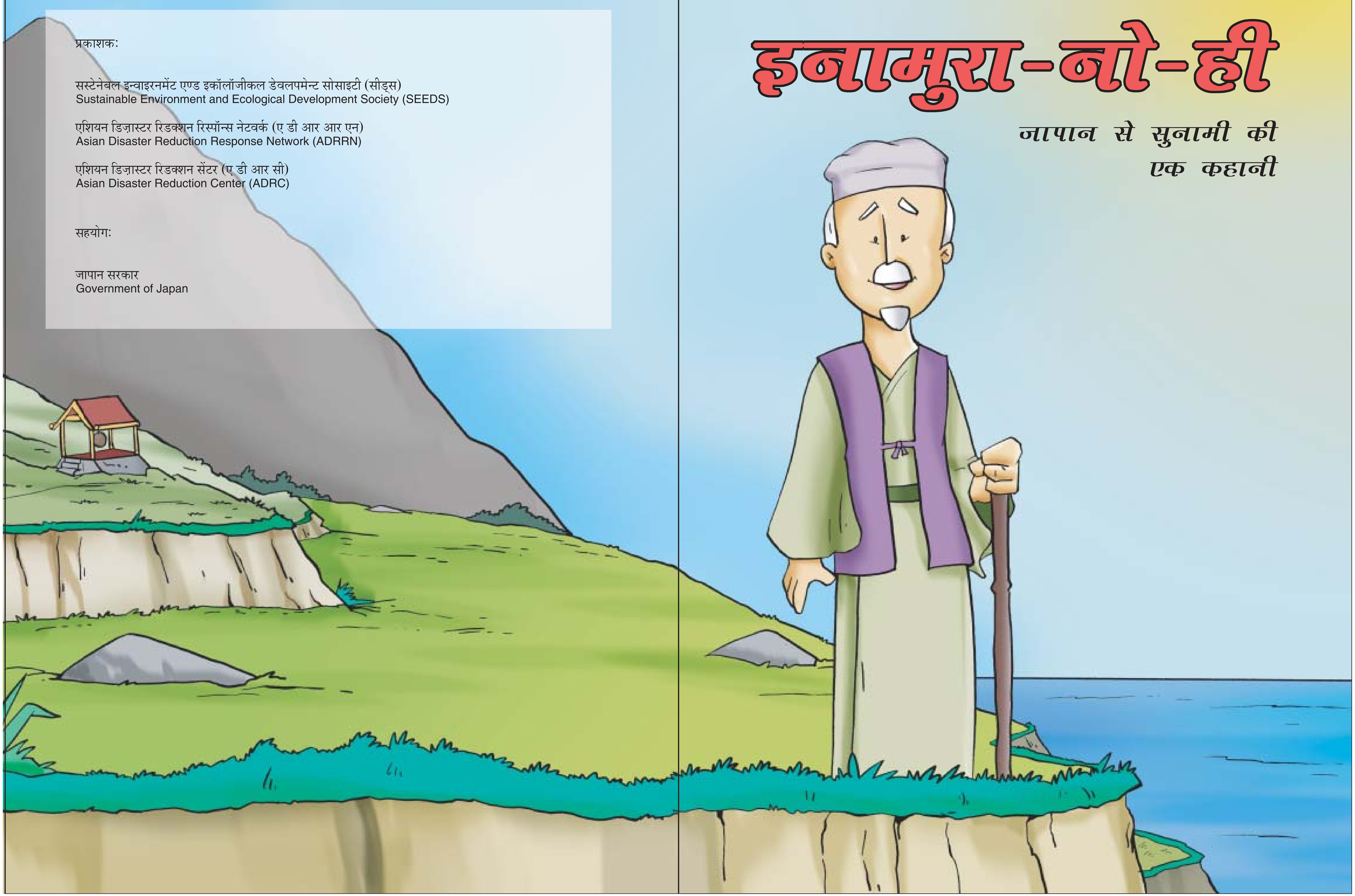

हिन्द महासागर में सुनामी

रविवार 26 दिसम्बर 2004 की सुबह उत्तरी सुमात्रा के तट के पास समुद्र में एक भयंकर भूकम्प आया जिससे सुनामी लहरें पैदा हुईं। इस सुनामी ने हिन्द महासागर के एक दर्जन देशों के कई शहरों, समुद्र तटीय क्षेत्रों और पर्यटक स्थानों को तहस–नहस कर दिया और लाखों लोगों की जान ले ली। यह भूकम्प पिछले 40 वर्षों में विश्व का सबसे भयंकर भूकम्प था।

यह पुस्तक सीड्स के सेफर वर्ल्ड कम्यूनिकेशन्स यूनिट द्वारा प्रकाशित की गयी है । यह, सीड्स - ए.डी.आर.आर.एन - ए.डी.आर.सी द्वारा भारत के सुनामी प्रभावित क्षेत्रों में सामुदायिक आपदा प्रबन्धन के लिये आरम्भ किये प्रयास का एक भाग है। हम निम्नलिखित व्यक्तियों का उनके योगदान के लिये आभार प्रकट करते हैं। कहानी व्यवस्थाः रवनीत बेन्स, मंजुशा गुप्ता; अनुवाद व सम्पादनः लता शर्मा, वी.कृष्नन; चित्रकारीः नितिन चावला।

Safer World Communications

SEEDS, D-11, Panchsheel Enclave,
New Delhi – 110017, India.
www.seedsindia.org

भारत में अन्डमान के एक गाँव की कक्षा का दृश्य, जिसमें वे छात्र हैं जिन्होंने 26 दिसम्बर 2004 की भयंकर सुनामी का सामना किया था।

''बच्चों, क्या आप सुनामी शब्द का अर्थ जानते हो ?''

''सुनामी का अर्थ है बहुत–बहुत बड़ी लहर। क्या आप जानते हो कि सुनामी जापानी शब्द है ? जापान, भारत के सुदूर पूर्व में एक छोटा सा देश है।''

''आज मैं आपको एक जापानी कहानी **इनामुरा-नो-ही** सुनाती हूँ जिसमें बताया है कि एक बुद्धिमान और बहादुर बूढ़े व्यक्ति ने किस तरह सुनामी से अपने गाँव के 400 लोगों की जान बचाई।''

पुराने समय की बात है – जापान में एक गाँव समुद्र तट के पास था। गाँव के लोग ऊँची पहाड़ी के ढलान पर रहते थे। गाँव में रहने वाले लोग पहाड़ी के ढलान पर चावल की खेती करते थे।

पहाड़ी की चोटी पर गाँव का मुखिया हामागुची रहता था। वह एक बुद्धिमान व दयालु व्यक्ति था। गाँव के सभी लोग उसका आदर करते थे और सलाह व सहायता के लिए उसके पास आते थे।

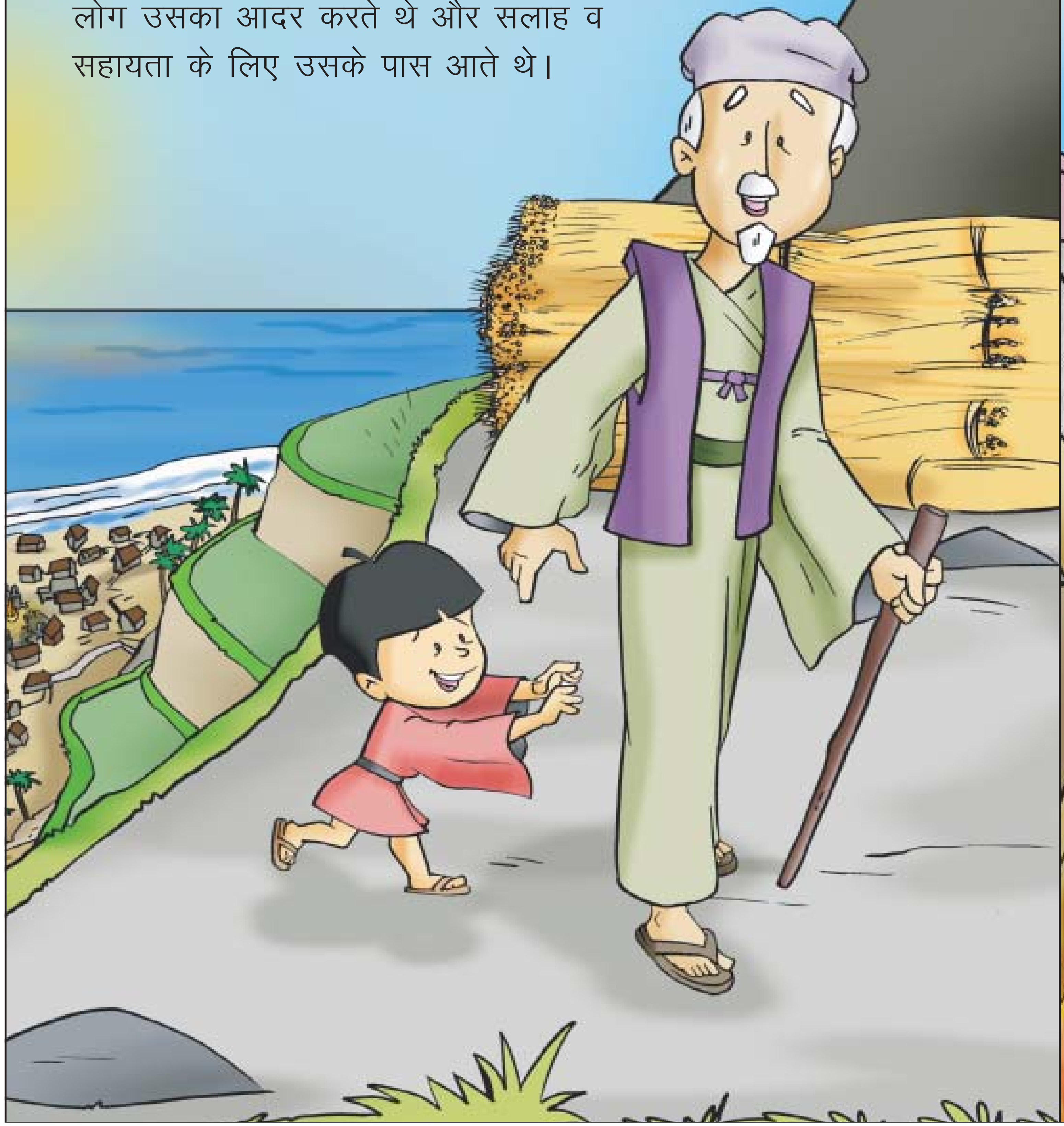

गाँव के लोगों ने इस वर्ष धान की एक अच्छी फसल उगाई थी। फसल की कटाई हो गई थी व लोग भरपूर फसल पैदा होने की खुशी में रात का जलसा मनाने की तैयारी कर रहे थे।

हामागुची के खेत में भी धान की फसल कट कर चावल निकालने के लिए तैयार थी। हामागुची और उसका पोता टाडा अकेले घर पर थे और परिवार के बाकी लोग नीचे गाँव में खुशियाँ मनाने गए थे। हामागुची अपने घर से ही जलसे का आनन्द ले रहा था।

हामागुची ने अचानक भूकम्प महसूस किया। यह बहुत तेज तो नहीं था पर अलग तरह का था।

तभी उसने देखा कि समुद्र का पानी तट से दूर भाग रहा था। जल्दी ही सारा समुद्रतट पानी से खाली हो गया था।

ग्रामवासी अच्छी फसल पैदा होने की खुशियाँ मनाने में मस्त थे अतः भूकम्प की तरफ उनका ध्यान नहीं गया।

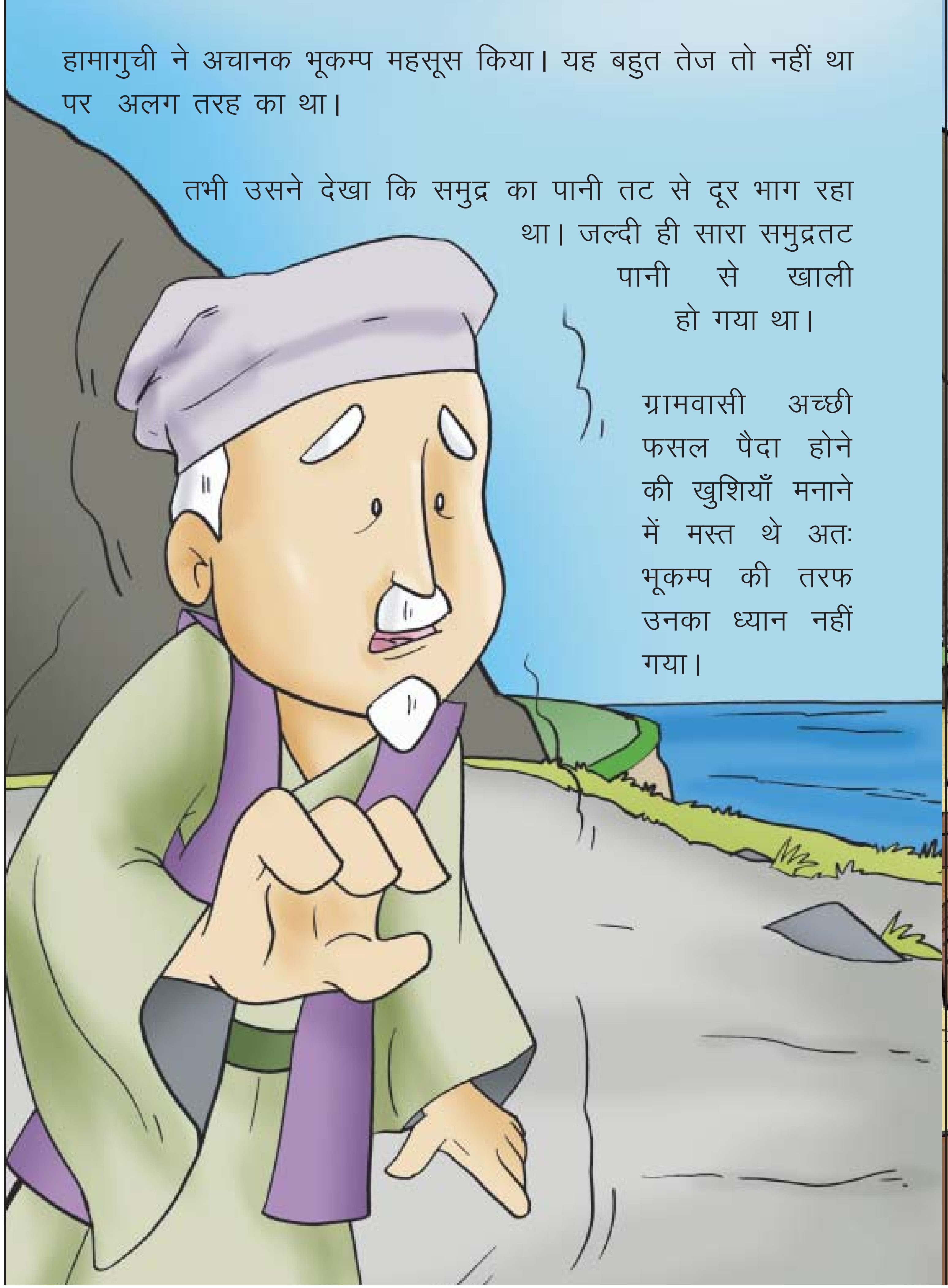

हामागुची ने इस तरह की घटना को कभी अनुभव नहीं किया था लेकिन उसे बचपन में उसकी दादी द्वारा सुनाई गई कहानियाँ याद थीं। जल्दी ही वह समझ गया था कि समुद्र में क्या होने वाला है।

''ओह ! यह तो सुनामी आने के संकेत हैं'', उसने अपने आप से कहा।

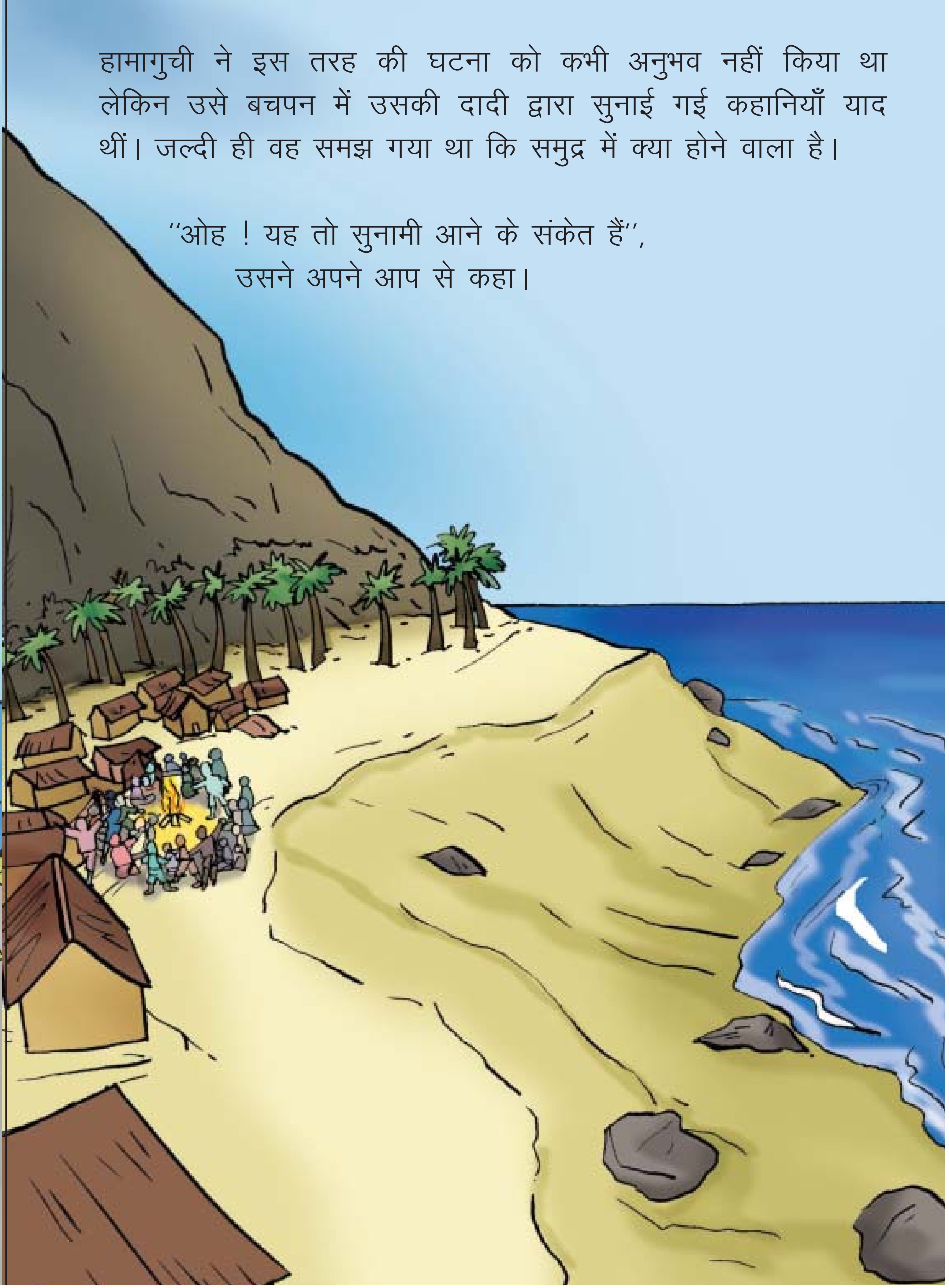

''लेकिन मैं गाँव वालों को यह सूचना कैसे दूँ ?''
जल्दी से सोचते हुए उसने अपने पोते को बुलाया।

''टाडा, जल्दी आओ। मुझे एक
जलती हुई लकड़ी दो।''

हामागुची ने जलती हुई लकड़ी लेकर
जल्दी से सूखे धान की फसल में आग
लगा दी।

''बाबा, रुको ! आप यह क्या कर रहे
हो''? टाडा चिल्लाया।

लेकिन हामागुची ने धान की फसल में आग लगा दी और जल्दी ही
वहाँ भयंकर आग जलने लगी।

जलते हुए धान को देखकर पास के एक मन्दिर में पुजारी ने आग
लगने की चेतावनी का घंटा बजा दिया, जिसे सुनकर सारे ग्रामवासी
सहायता करने के लिए दौड़ कर पहाड़ी के ऊपर पहुँचे।

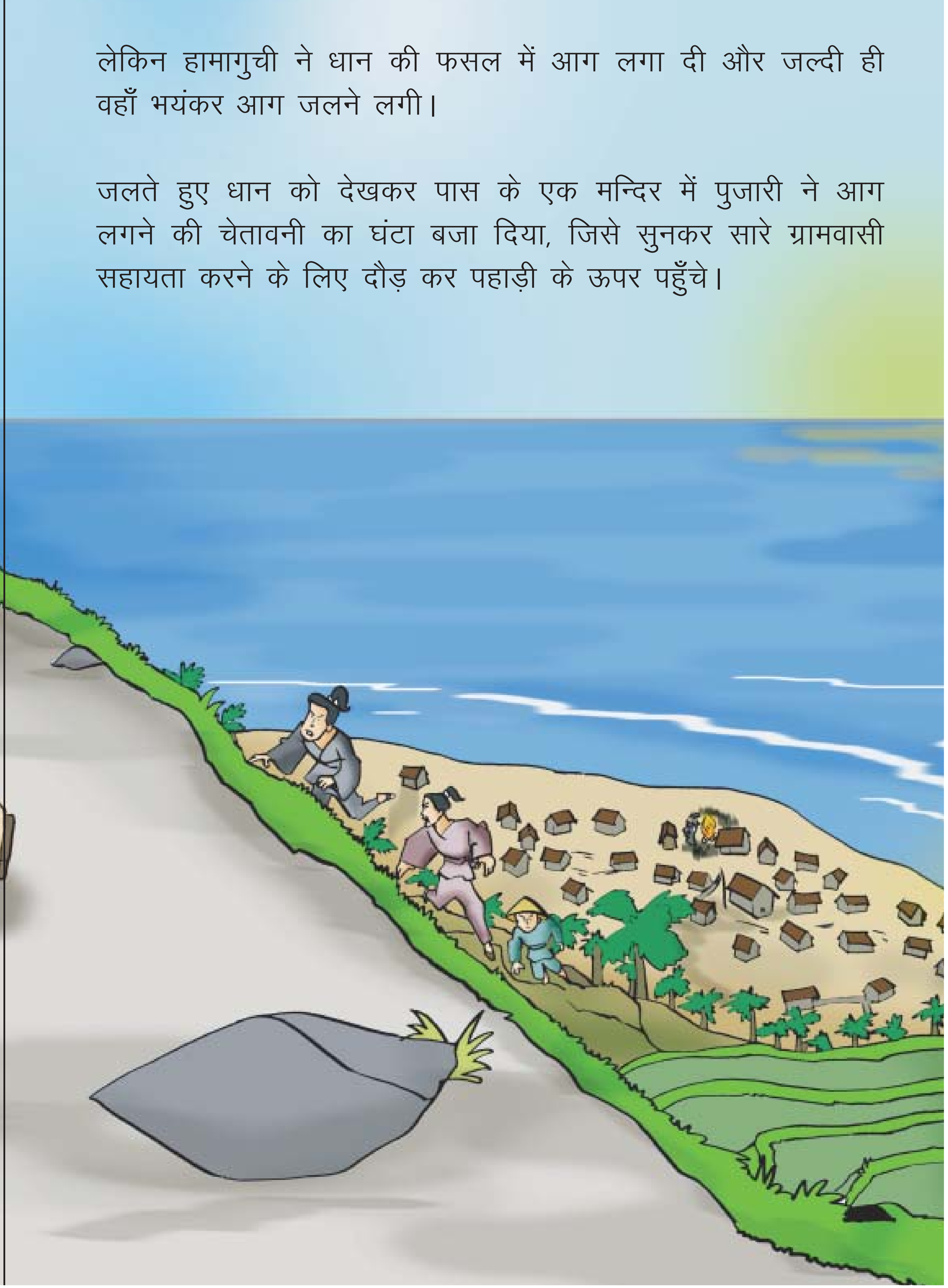

जो युवक सबसे पहले पहुँचे, वे पानी भरी बाल्टियाँ लेकर आग बुझाने के लिए बढ़े। बाकी लोग भी पीछे से दौड़े–दौड़े आए।

लेकिन हामागुची ने उन्हें आग बुझाने से रोक दिया। उसने कहा ''फसल को जलने दो। मैं चाहता हूँ कि सारा गाँव यहाँ इकट्ठा हो जाए।''

''क्या सब लोग यहाँ आ गए हैं?'' हामागुची ने गाँव की तरफ देखते हुए पूछा।

धान के जलते हुए गट्ठरों को देख कर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ व उन्होंने हामागुची से पूछा – ''क्या हुआ?''

हामागुची ने समुद्र की तरफ इशारा करते हुए कहा – ''देखो।''

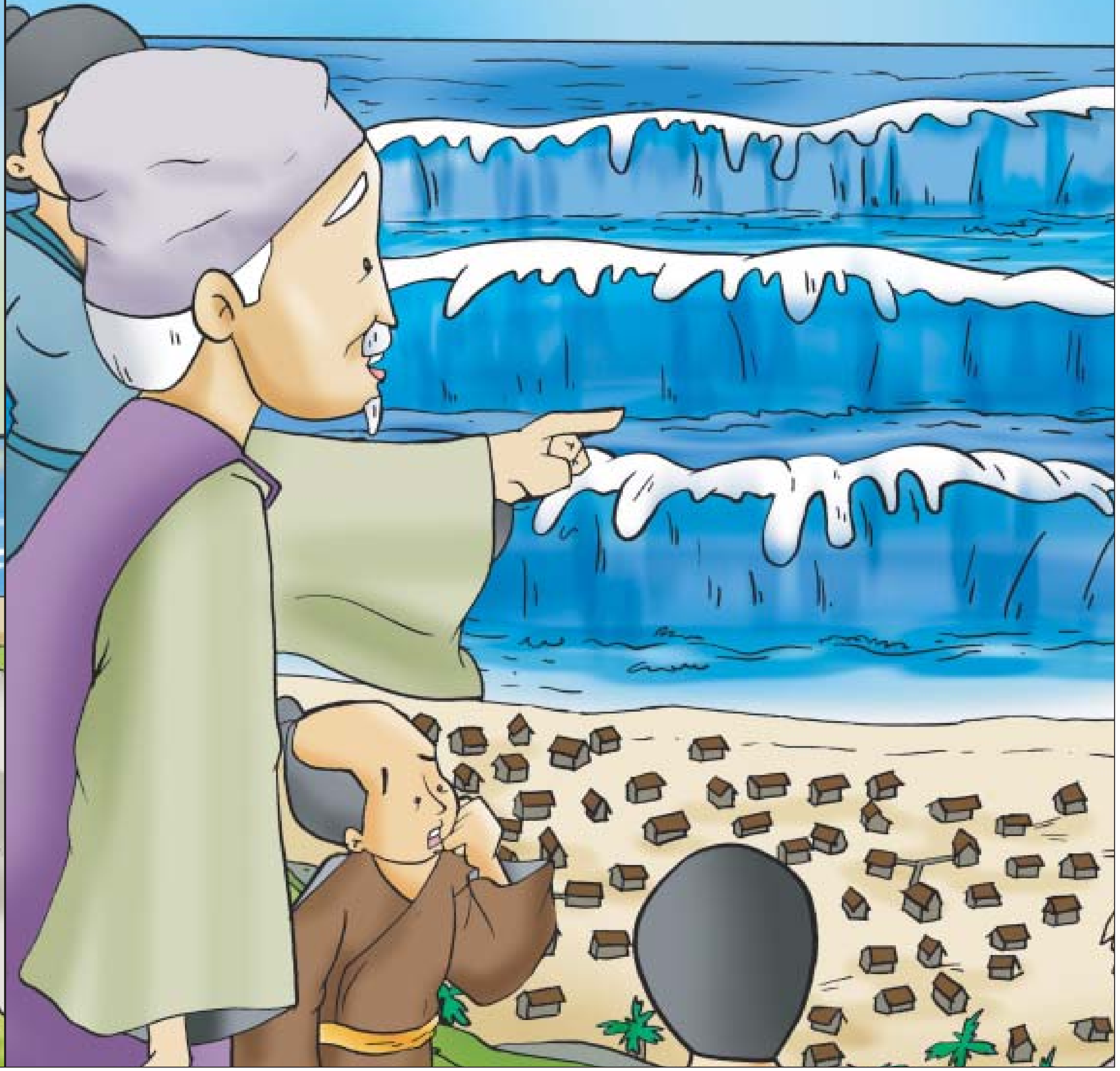

ज्यों ही सब लोग समुद्र देखने को मुड़े तो उन्होंने देखा कि समुद्र का पानी लौट रहा था। तभी समुद्र का पानी एक दीवार की तरह खड़ा हो गया। कोई चिल्लाया... ''अरे यह तो सुनामी है!''

समुद्री लहर जोर के झटके और गर्जना वाले धमाके के साथ किनारे की पहाड़ी से टकराई। इस लहर ने पूरे गाँव को नष्ट कर दिया और वापिस लौट गई। इसी तरह लहरें लौट–लौट कर कुल पाँच बार आईं।

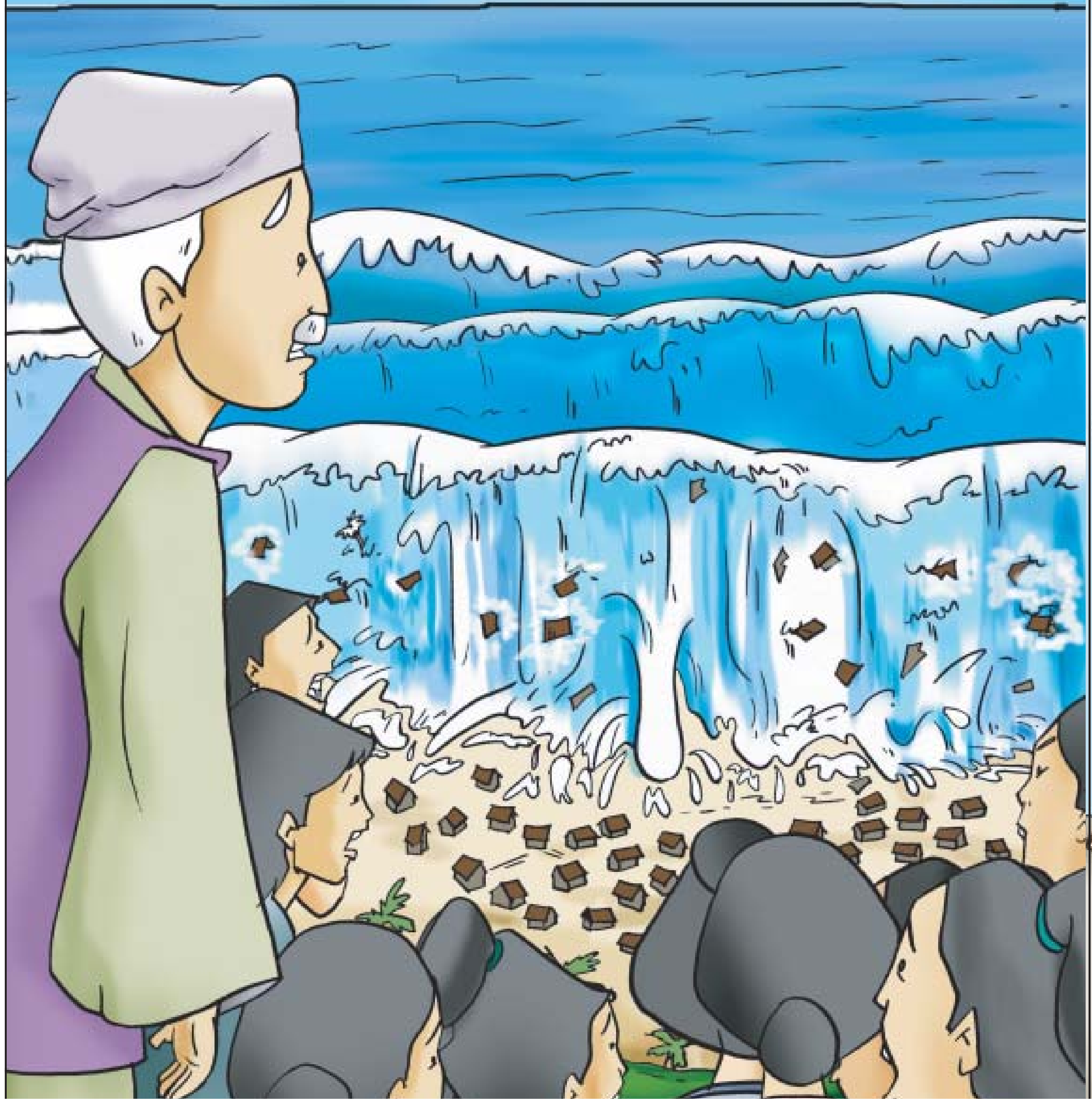

लेकिन ग्रामवासी पहाड़ी के ऊपर सुरक्षित थे। कोई कुछ नहीं बोला – वे अपने नष्ट हुए घरों व फ़सल को सिर्फ़ देखते रहे।

अब गाँव वालों की समझ में आया कि हामागुची ने उनको पहाड़ी पर बुलाने के लिए व इस तरह उनकी जान बचाने के लिए ही खेतों में आग लगाई थी।

गाँव वालों की समझ में नहीं आ रहा था कि हामागुची को क्या कहकर धन्यवाद करें। वे सिर्फ उसके सामने श्रद्धा से झुक गए।

सदियों बाद जापान में लोग आज भी हामागुची को उनके इस महान कर्म के लिए याद करते हैं व उन्हें पूजते हैं।

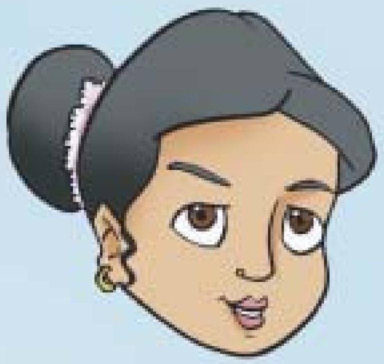

आओ अब हम समझें कि सुनामी क्या है ?

सुनामी का मतलब है एक बहुत–बहुत बड़ी भयंकर समुद्री लहर।

सुनामी क्यों होती है ?

धरती की सतह कई मोटी प्लेटों से बनी हुई है। प्लेटों के नीचे भीषण गर्मी है और वहाँ चट्टान तरल रुप में हैं। जब तरल पदार्थ में ऊष्मा पैदा होती है तो प्लेटों पर दबाव पड़ता है जो उनको हिलाता है।

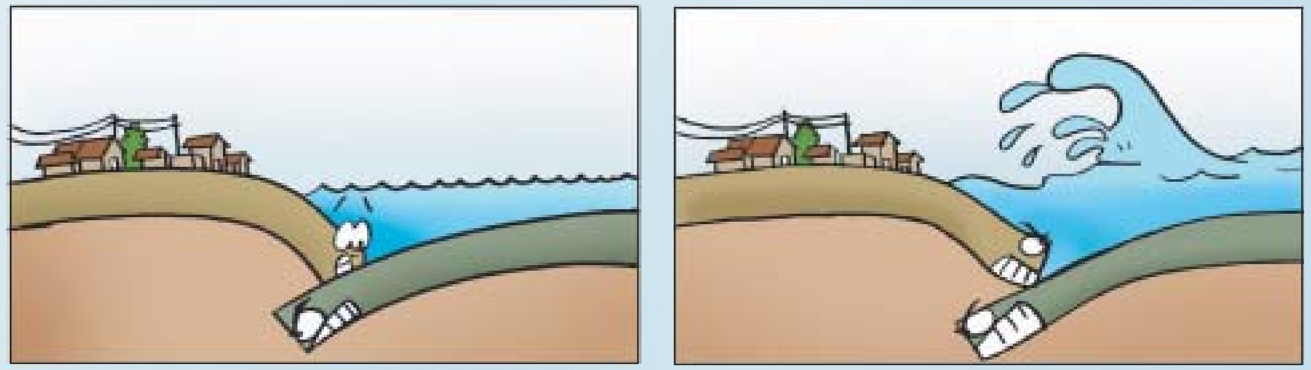

जब यह दबाव बहुत ज्यादा हो जाता है तब प्लेट सरक कर दूसरी प्लेट से जोर से टकराती है और धरती में कम्पन पैदा होता है। इसे भूकम्प कहते हैं। जब यह टक्कर समुद्र के नीचे होती है तो कभी–कभी सुनामी पैदा करती है।

सुनामी के बारे में जरुरी बातें :-

- सुनामी भूकम्प के तुरन्त बाद या कई घन्टों बाद भी आ सकती है।
- कुछ घटनाओं में समुद्र का पानी लौटता हुआ नज़र नहीं आता है।
- सुनामी बहुत तेज़ गति से आती है।
- पहली लहर सबसे तेज हो यह जरुरी नहीं है। दूसरी या तीसरी लहर सबसे बड़ी हो सकती है।

आओ अब हम समझें सुनामी से बचने के लिए क्या करना चाहिए ?

- जब भी भूकम्प महसूस हो तुरन्त अपनी जगह छोड़कर ऊँचे स्थान पर चले जाएँ।
- सतर्क रहें !!! अगर भूकम्प कहीं दूर समुद्र में आता है तो किनारे पर धरती का हिलना पता नहीं चलेगा लेकिन सुनामी आ सकती है।
- अक्सर सुनामी में एक से अधिक लहरें होती हैं। इसलिए कई घंटों तक सुरक्षित जगहों पर रुके रहें।

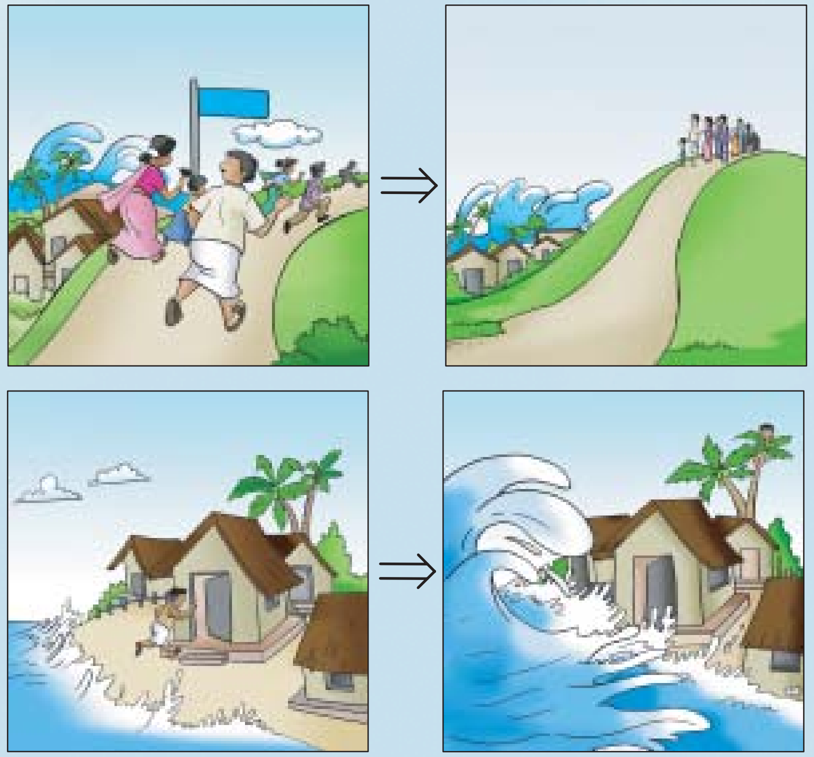

तत्काल ऊँचे स्थान की ओर भागें!